[Total No. of Printed Page : 4] Roll No…….

पी. जे.-101

खगोलिय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरंभिक गणित

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा/प्रमाणपत्र (डी.पी.जे./जे.सी.पी.जे.-12/16/17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र, 2019

समय : 3 घंटा पूर्णांक-80

नोट: यह प्रश्नपत्र 80 अंकों का है जो तीन (3) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड - 'क'
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट :- खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. प्राचीन भारतीय खगोल शास्त्र विषय पर विस्तृत निबन्ध लिखें।

2. स्वकल्पित उदाहरण द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि का प्रतिपादन करें।

3. बोडश वर्गों के नाम लिखें। द्रेष्काण व त्रिंशांश साधन की विधि का सोदाहरण वर्णन करें।

4. योगिनी दशा व अन्तर्दशा साधन की विधि का सोदाहरण वर्णन करें।

खण्ड - 'ख'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट: - खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय वाले प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। परीक्षार्थी को इनमें से केवल चार प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. चन्द्र स्पष्ट साधन विधि का सोदाहरण विवेचन करें।
2. विंशोत्तरी दशा-अन्तर्दशा साधन विधि का प्रतिपादन करें।
3. सोदाहरण नवमांश साधन विधि का प्रतिपादन करें।
4. प्राचीन भारतीय काल गणना पर लघु निबन्ध लिखें।
5. द्वादशांश व सप्तमांश साधन विधि का वर्णन करें।
6. अक्षवेदांश व दशमांश का वर्णन कीजिये।
7. कल्पित उदाहरणों द्वारा विविध कालों में इष्टकाल साधन विधि का वर्णन करें।
8. पंचांगों का विस्तृत परिचय प्रदान करें।

खण्ड - 'ग'

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नोट : खण्ड 'ग' में दस 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

$10 \times 1 = 10$

सही विकल्प का चयन कीजिए।

1. करणों की कुल संख्या है-
   (i) 27
   (ii) 11
   (iii) 15
   (iv) 7

2. विंशोत्तरी महादशा में चन्द्र की दशा वर्ष संख्या है-

(i) 20

(ii) 18

(iii) 10

(iv) 7

3. एक होरा का मान होता है-

(i) 10^{o}

(ii) 15^{o}

(iii) 8^{o}

(iv) 30^{o}

4. तुला राशि का स्वामी ग्रह है-

(i) सूर्य

(ii) चन्द्र

(iii) गुरू

(iv) शुक्र

5. योगिनी महादशा में गणना किस नक्षत्र से प्रारम्भ होती है-

(i) अश्विनी

(ii) कृत्तिका

(iii) आर्द्रा

(iv) पुनर्वसु

6. किस भाव की केन्द्र संज्ञा है-

(i) नवम

(ii) चतुर्थ

(iii) षष्ठ

(iv) तृतीय

7. एक द्वादशांश का मान होता है–

(i) 10^{o}

(ii) $20^{o}/ 30^{1}$

(iii) $3^{o} / 20^{1}$

(iv) 15^{o}

8. योगिनी महादशा में प्रथम दशा होती है–

(i) मङ्गला

(ii) पिङ्गला

(iii) धान्या

(iv) भ्रामरी

9. एक नक्षत्र में चरण होते हैं–

(i) 4

(ii) 5

(iii) 9

(iv) 12

10. एक अंश में कलाएं होती हैं–

(i) 30

(ii) 45

(iii) 60

(iv) 20

*****